ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

हाय - पंजाबी - हाय!!!

विदिआ वीचारी तां पर परउपकारी।।

www.sikhworld.info

Donation : A/c HDFC : 04501570003814 IFSC 0000450

प्रकाशक

क्रांतिकारी जगत् गुरू नानक देव चैरिटेबल ट्रस्ट, चण्डीगढ़

लेखक जसबीर सिंघ Ph. : (0172-2696891), 09988160484

Type Setting : Radheshyam Choudhary Mob. 09814966882

Guru's : Sahidi, Hindi Booklet, Punjabi Booklet, English Booklet, Life Style, Mitra Mandali, Gurbani Ukakashari & Gurbani Selected Tukan

Download free

हाय – पंजाबी – हाय

पंजाब के सिक्खों में एक गलत धारणा मन में बैठ गई है, कि प्रत्येक सिक्ख व्यक्ति को गुरुमुखी लिपी जाननी अनिवार्य है नहीं तो वे गुरुमति साहित्य अध्ययन नही कर पायेगे। अत: वे सिक्ख धीरे – धीरे सिक्खी से दूर पतन की ओर बढ़ जायेगे। भावार्थ यह हुए कि यदि सिक्ख पंजाबी भाषा और गुरुमुखी लिपी का ज्ञान नहीं रखता तो वह सिक्ख नहीं।

वास्तव में बात इस के विपरीत है इस बात को प्रत्यक्ष उदाहरण है – पंजाब के मूल निवासी सिक्खों में अधिकांश गुरुमति विरोधी करम करते हैं और उनकी युवा पीड़ी पतन की तरफ बढ़ती ही चली जा रही है जब कि वे लोग पंजाबी और गुरुमुखी दोनों जानते हैं और सिक्ख जीवन शैली से भी भली भान्ति परिचित हैं। परन्तु इन लोगों में गुरमति ज्ञान प्राप्त करना अथवा उस पर जीवन व्यापन करना का कोई संकल्प है ही नहीं। जब कि दूसरे प्रांतों में बसे सिक्ख लोग बहुत जागरुक है वे अपने बच्चों को स्थानिये भाषा तथा लिपियों में गुरमति ज्ञान देते हैं और दृढ़ संकल्प से सिक्ख जीवन शैली पर पहरा देते हैं उन लोगों में पतित लोग ढूंढने पर भी नहीं मिलते!

यदि पंजाबी का ज्ञान सिक्खी का मूल मंत्र होता तो पाकिस्तान के पंजाबियों को तो सिक्ख हो जाना चाहिए था क्योंकि वे हम लोगों से कई अच्छी तरह पंजाबी बोलते और जानते हैं। बात यहीं समाप्त नहीं होती जब सेना न श्री दरबार साहब अमृतसर पर आक्रमण किया था तब अमृतसर के मूल निवासी 'महाशा' लोगों ने सेना की अगवानी की और उन्हें मिठाईयां बांटी। यदि पंजाबी भाषा अथवा गुरुमुखी सिक्खी होती तो इन लोगों को तो सिक्ख हो जाना चाहिए था। क्योंकि वे सभी सिक्ख परम्परा अच्छी तरह जानते थे?

अब हम उन सिक्ख लोगों कि बात करते हैं जो कभी भी पंजाब नहीं आये और वे पंजाबी भाषा का ज्ञान भी नहीं रखते वे मूलरूप में अमेरिकन नागरिक हैं परन्तु सिक्खी पर श्रद्धा के मामले में वे हम से कहीं अधिक आगे हैं।

इस के अतिरिक्त यदि विश्व तथा भारत में ही देखें तो यहां कश्मीर से कन्याकुमारी तक बहुत से लोग अलग-अलग धार्मिक विश्वासों को लेकर जीवन व्यापन करते हैं परन्तु किसी ने भी नहीं कहा कि हम संस्कृत नहीं जानते तो हम हिन्दू नहीं अथवा हम अरबी नहीं जानते तो हम मुस्लिम नहीं आदि, ये सभी लोग स्थानीय भाषाओं में ही अपनी धार्मिक साहित्य पढ़ते और लिखते हैं और फलते फूलते हैं। क्या सिक्ख लोग इसी प्रकार स्थानीय भाषाओं में उन्नती नहीं कर सकते?

अधिकांश पंजाब के सिक्ख लोगों को हिन्दी भाषा से चिड़ हो गई है। वे लोग गुरुमति का साहित्य पहले तो तैयार ही नहीं करते, यदि कोई यह कार्य करता भी है तो वह केवल पंजाबी में ही, कभी कभार किसी बुद्धिजीवि ने कोई साहित्य अंग्रेजी और पंजाबी दोनों भाषाओं में प्रकाशित करवाया भी है, परन्तु अंग्रेजी जन-साधारण की भाषा ना होने के कारण उस का प्रभाव देखने को नहीं मिलता क्योंकि लगभग सत्तर करोड़ लोग हिन्दी भाषा को पढ़ना-लिखना जानते हैं जिन तक यह साहित्य कभी पहुंचा ही नहीं, जब कि उन लोगों के हृदय में सिक्ख गुरुजनों तथा सिक्ख संघ्रष के विषय में जानने की तीव्र जिज्ञासा रहती है। समस्त देश में इस समय जन साधारण की भाषा हिन्दी है यदि हम अपनी बात लोगों तक पहुँचाना चाहते है तो हमें अपना साहित्य अन्य भाषाओं में भी छपवाना चाहिए। जिससे हम लोग एक दूसरे के निकट आ सके। विशेषकार यदि हम हिन्दी भाषा में सिक्ख (गुरमति) साहित्य तैयार करे तो अधिक लोक प्रिय होगा और हमारा लक्ष्य भी सफल होगा। अभी देखा यह जाता है ''अंधा बांटे रेवडियां मुड़-मुड़ अपनों को देह'' इस प्रकार हमारे किये गये प्रयास सफल नहीं होते क्यों कि गुरमति साहित्य प्राप्त करने वाला यह कहता देखा जाता है कि मैं तो इस विषय में पहले से जानता हूँ। मेरा व्यक्तिगत सर्वेक्षिण यह दर्शाता है।

अत: मेरा समस्त सिक्ख बुद्धिजीवियों से अनुरोध है कि हम समय रहते अपना गुरुमति साहित्य देशी तथा विदेशी भाषाओं में जल्दी अनुवाद करवा कर विश्व के सभी उन जिज्ञासुओं तक पहुँचाने का कार्य करें जो सिक्ख परम्परा तथा सिक्ख गुरूजनों के उपदेशों को जानने की तीव्र इच्छा रखते हैं।

हमारे पास कुछ ऐसे प्रमाण हैं जिन अन्य लोगों ने गुरुमति साहित्य पढ़ा वह मन से सिक्ख

होकर रह गये जैसे – आर्य समाजी हिन्दू लाला दौलत राय इनको दुर्गीयाना मन्दिर अमृतसर कमेटी ने एक लक्ष्य दिया था कि आप श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी के जीवन वृतांत पर उस में कुछ खामियां ढूढंकर सिक्ख पंथ पर लांछन लगा कर उन की भर्त्सना करें। परन्तु जब उन्होंने गुरदेव का जीवन वृतांत पढ़ा तो वह गुरदेव के आशिक बन कर रह गये तब उन्होंने एक पुस्तक रची जिस का नाम ''साहेब कमाल श्री गुरू गोबिन्द सिंघ जी'' रखा। यह पुस्तक मूल रूप में उर्दू में है। इनदिनों यह अंग्रेज़ी, पंजाबी तथा हिन्दी में भी उपलब्ध है। सिक्ख जगद् में इस पुस्तक को अमुल्य रतन माना जाता है। ठीक इस तरह हिन्दू जगद् के महान आचार्य श्री राम तीर्थ डण्डी संन्यासी जी ने बहुत आध्यात्मिक ज्ञान की साहित्य रचनाएं की परन्तु जब उन्होंने श्री गुरू ग्रंथ साहब का अध्ययन किया तो वह आश्चर्य – चकित हुए और वह बोले काश यह ग्रंथ मैंने पहले पढ़ा होता, तो मेरे जीवन के बहुत से अमुल्य वर्ष व्यर्थ न जाते और उन्होंने कहा – श्री गुरू ग्रंथ साहेब अध्यात्मिक ज्ञान का सम्पूर्ण ग्रंथ है तब उन्होंने एक लघू पुस्तक लिखी जिन का नाम रखा ''सर्वोतम ग्रंथ श्री गुरू ग्रंथ साहब'' तब उन्होंने अपनी बाकी के स्वांशों की पूंजी को सफल करने के लिए सिक्खी स्वरूप धारण कर अमृत पान कर लिया। इसके अतिरिक्त अंग्रेज़ लिखारी कंनीघम तथा मेकालफ। 'शहीदे गंजा' का लिखारी – – – – – इत्यादि वर्णन योग्य हैं।

सिक्ख लोग लंगर बाँटने पर अन्नत धन खर्च करते हैं परन्तु देश वासियों की जिज्ञासा शांत करने के लिए समय – समय नगर कीर्तनों में कोई भी लघु पुस्तक उस विशेष पर्व के विषय में नहीं बांटते। इस प्रकार सक्खों द्वारा बांटा गया लंगर सिक्खी प्रचार – प्रसार की क्रिया में कोई विशेष लाभ नहीं पहुँचाता। यदि इस खर्च किये गये धन का दसवा भाग भी गुरमति साहित्य बांटने पर खर्च किया जाये तो हमारे विरोधी हमारे मित्र बन जाते। हमें और कुछ नहीं करना था, केवल श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी की शहीदी वृतांत को हिन्दी में लघु पुस्तिका के रूप में घर – घर पहुँचाना था। इस क्रिया के करने मात्र से हमारे विरोधियों की कमर टूट जानी थी और उनकी आंखे नीची हो जानी थी। जब जन – साधारण को यह मालुम होता कि.....

.....

ना कहूँ अब की, ना कहूँ तब की

“अगर न होते गुरु गोबिंद सिंघ, होती सुन्नत सब की”।

बुल्लेशाह

हमें किश्चन लोगों से प्रचार करने की विधियां सिखनी चाहिए वे लोग दुनियां की समस्त भाषाओं में अपना धार्मिक साहित्य मुफ्त बांटते है और हम इस विषय में कभी सोचते भी नहीं?

समाप्त

अनुवाद कर्त्ता

सतबीर कौर   फोनः 09815376888

लेखक

जसबीर सिंघ   फोनः 099881-60484

Type Setting : Radheshyam Choudhary

Mob.: 098149-66882

निम्नलिखित वेबसाइट में दस गुरूजनों का सम्पूर्ण जीवन वृत्तांत विस्तृत रूप में अवश्य देखें तथा पढ़ें।

www.sikhworld.info
or
www.sikhhistory.in

E-mail : info@sikhworld.info
&
jasbirsikhworldinfo@gmail.com

ਉਪਰੋਕਤ ਵੇਬ ਸਾਇਟ ਵਿੱਚ ਦਸ ਗੁਰੂਸਾਹਿਬਾਂਨ ਦਾ ਸੰਪੂਰਨ ਜੀਵਨ ਬਿਊਰਾ ਵਿਸਤਾਰ ਸਹਿਤ ਜ਼ਰੂਰ ਦੇਖੋ ਅਤੇ ਪੜੋ ਜੀ।

इस वैब साईट की विशेषता

ਇਸ ਵਿਚ ਹੈ ਇਕ ਵਿਸਾਲ ਸਿੱਖ ਸੰਗ੍ਰਹਾਲਯ (Museum)
ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਦੇ ਜੀਵਨ ਵ੍ਰਿਤਾਤਾਂ ਨਾਲ ਸਬੰਧਿਤ ਘਟਨਾ ਕਰਮ ਦੀਆਂ ਤਸਵੀਰਾਂ ਤੋਂ ਲੈਕੇ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ ਦੇ ਜੀਵਨ ਤਕ ਕਾਲਪਨਿਕ ਤਸਵੀਰਾਂ ਜੋ ਇਤਿਹਾਸ ਦ੍ਰਿਸਾਉਂਦੀਆਂ ਹਨ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਹੇਠ ਹਨ ਹਿੰਦੀ, ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਚ ਟਿਪਣੀਆਂ (ਫੁੱਟਨੋਟ) ਜੋ ਕਿ ਘਟਨਾਂ ਕਰਮ ਅਤੇ ਇਤਿਹਾਸਿਕ ਪਰਸੰਗਾਂ ਦਾ ਵਰਣਨ ਕਰਦਿਆਂ ਹਨ।

ਨੋਟ :- ਇਹ ਕੰਮ ਬੱਚਿਆਂ ਦੀ ਰੁਚੀ ਨੂੰ ਮੁਖ ਰਖਦੇ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ। ਤਾਂਕਿ ਉਹ ਸਹਿਜੇ ਹੀ ਅਪਣਾਂ ਇਤਿਹਾਸ ਜਾਣ ਸਕਣ। ਮੈਂਨੂੰ ਉਮੀਦ ਹੈ ਕਿ ਸਿੱਖ ਜਗਤ ਦੇ ਕਿਸ਼ੋਰ ਅਤੇ ਯੁਵਕ ਇਸ ਵਿਧੀ ਤੋਂ ਲਾਭ ਉਠਾਉਣਗੇ। ਕਿਉਂਕਿ ਇਸ ਵਿਧੀ ਵਿਚ ਅੱਧੀ ਗਲ ਤਸਵੀਰਾਂ ਕਹਿੰਦੀਆਂ ਹਨ ਅਤੇ ਅੱਧੀ ਗਲ ਫੁਟ ਨੋਟ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਪਠਕਾਂ ਦੇ ਮਨ ਵਿਚ ਅਪਣੇ ਇਤਿਹਾਸ ਨੂੰ ਪੜਨ ਲਈ ਇੱਛਾ ਜਾਗਰਿਤ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।
ਹੁਣ ਤੁਸੀ ਇਸ ਤੋਂ ਅਗੇ ਸਤਾਰਵੀਂ, ਅਠਾਹਰਵੀਂ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹੰਵੀਂ ਸੱਦੀ ਦੇ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਦੀਆਂ ਤਸਵੀਰਾਂ ਫੁਟ ਨੋਟ ਸਹਿਤ ਵੇਖੋਗੇ। ਇਸ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਸਿੱਖ ਮਹਾਪੁਰਖਾਂ ਦੇ ਚਿਤਰ ਅਤੇ ਬੁਧੀ ਜੀਵੀਆਂ ਦੇ ਚਿੱਤਰ ਅਤੇ ਟਿਪਣੀਆਂ ਪੜ੍ਹ ਸਕੋਗੇ।
ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰਕੇ ਆਪ ਜੀ ਸਿੱਖ ਮਿਉਜ਼ਿਮ ਤੇ ਜ਼ਰੂਰੀ ਕਲਿਕ ਕਰੋਜੀ।

नोट :-
1. ਜੇਕਰ ਕੋਈ ਇਸ ਨੂੰ ਦੁਬਾਰਾ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਿਤ ਕਰਵਾਣਾਂ ਚਾਹੇ ਤਾਂ ਉਹ ਇਸ ਨੂੰ ਮੁਫ਼ਤ ਵੰਡ ਸਕਦਾ ਹੈ।
2. यदि कोई इसे पुनः प्रकाशित करवाना चाहे तो वह निःशुल्क बांट सकते हैं।

Download Free